12077CH01

## प्रथमः पाठः

# अनुशासनम्

प्रस्तुत अंश वैदिक वाङ्मय में अद्वितीय स्थान रखने वाले तैत्तिरीय उपनिषद् के ग्यारहवें अनुवाक (शिक्षावल्ली) से संकलित है। उपनिषदों का प्रादुर्भाव वैदिक ज्ञान के विकास रूप में हुआ है। उपनिषद् का अर्थ है (ज्ञानार्थ) गुरु के समीप बैठना। इस गुरुशिष्य परम्परा में अध्ययन के उपरान्त आचार्य के द्वारा शिष्य को जीवनोपयोगी यह उपदेश दिया गया। यह मनोरम उपदेश इतने सहजभाव से प्रस्तुत किया गया है कि सीधा हृदय को स्पर्श करता है।

**वेदमनूच्याचार्योऽन्तेवासिनमनुशास्ति। सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः। आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः। सत्यान्न प्रमदितव्यम्। धर्मान्न प्रमदितव्यम्। कुशलान्न प्रमदितव्यम्। भूत्यै न प्रमदितव्यम्। स्वाध्याय-प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्। देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम्। मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव। यान्यनवद्यानि कर्माणि, तानि सेवितव्यानि, नो इतराणि। यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि, नो इतराणि। अथ यदि ते कर्मविचिकित्सा वा वृत्तविचिकित्सा वा स्यात्, ये तत्र ब्राह्मणाः सम्मर्शिनः, युक्ता आयुक्ताः, अलूक्षा धर्मकामाः स्युः, यथा ते तत्र वर्तेरन् तथा तत्र वर्तेथाः। एष आदेशः। एष उपदेशः। एषा वेदोपनिषत्। एतदनुशासनम्। एवमुपासितव्यम्। एवं चैतदुपास्यम्।**

## शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च

**अनुशासनम्** – अनु + शास् + ल्युट्, आदेश (शिक्षा)।

**अनूच्य** – अनु + वच् + ल्यप् (पढ़ाकर)।

**अन्तेवासिनम्** – गुरोरन्ते समीपे वसतीति अन्तेवासी, सप्तमी अलुक्, द्वितीया एकवचन। शिष्य को।

© NCERT not to be republished

| | | |
|---|---|---|
| **अनुशास्ति** | – | अनु + शास् + लट् प्र.पु. एकवचन, उपदेश देता है। |
| **स्वाध्यायात्** | – | स्व + अध्यायात्, पं. एकवचन, स्वाध्याय से। |
| **मा प्रमदः** | – | आलस्य मत करो। |
| **आहृत्य** | – | आ + हृ + ल्यप्, लाकर। |
| **प्रजातन्तुम्** | – | प्रजायाः तन्तुः, द्वितीया एकवचन, वंशपरम्परा को। |
| **मा व्यवच्छेत्सीः** | – | वि + अव् + छिद्, लुङ् म.पु. एकवचन, मत तोड़ो |
| **भूत्यै** | – | भूति चतुर्थी एकवचन, ऐश्वर्य (धन) के लिए। |
| **अनवद्यानि** | – | न + अवद्यानि, नञ् तत्पु., प्रथमा बहुवचन, अनिन्द्य। |
| **इतराणि** | – | दूसरे। |
| **सुचरितानि** | – | सत्कर्म। |
| **उपास्यानि** | – | उपासितुं योग्यानि, प्रथमा बहुवचन, उपासना के योग्य। |
| **श्रेयांसः** | – | कल्याण करने वाले, अधिक श्रेष्ठ। |
| **आसनेन** | – | आसन के द्वारा। |
| **प्रश्वसितव्यम्** | – | प्र + श्वस् + तव्यत्, उचित सम्मान करना चाहिए। |
| **श्रद्धया** | – | श्रद्धा से। |
| **संविदा** | – | सद्भाव से (कर्त्तव्यभाव से)। |
| **कर्मविचिकित्सा** | – | कर्मणि विचिकित्सा, सप्तमी तत्पुरुष, उचित अनुचित कर्म के विषय में सन्देह। |
| **संमर्शिनः** | – | विचारशील, सहनशील। |
| **युक्ताः** | – | ज्ञान विज्ञान में तृप्त। |
| **आयुक्तः** | – | स्वतन्त्र निर्णय में समर्थ। |
| **अलूक्षाः** | – | अरूक्षाः, कोमल। |
| **धर्मकामाः** | – | धर्मस्य कामाः, कर्त्तव्यपरायण। |
| **वर्तेरन्** | – | वृत् विधिलिङ्, प्र.पु. बहुवचन, व्यवहार करें। |
| **वर्तेथाः** | – | वृत् विधिलिङ्, म.पु. एकवचन, व्यवहार करो। |
| **आदेशः** | – | आज्ञा। |
| **वेदोपनिषत्** | – | वेदस्य उपनिषत्, ष.त.समास, ज्ञान का सार। |
| **उपासितव्यम्** | – | उप + आस् + तव्यत्, उपासना के योग्य। |
| **उपास्यम्** | – | उप + आस् + यत्, उपासना करनी चाहिए। |

© NCERT not to be republished

## सन्धिविच्छेदः

| | | |
|---|---|---|
| **आचार्योऽन्तेवासिनम्** | – | आचार्यः + अन्तेवासिनम् |
| **स्वाध्यायान्मा** | – | स्वाध्यायात् + मा |
| **व्यवच्छेत्सीः** | – | वि + अवच्छेत्सीः |
| **सत्यान्न** | – | सत्यात् + न |
| **यान्यनवद्यानि** | – | यानि + अनवद्यानि |
| **यान्यस्माकम्** | – | यानि + अस्माकम् |
| **त्वयोपास्यानि** | – | त्वया + उपास्यानि |
| **चास्मच्छ्रेयांसः** | – | च + अस्मत् + श्रेयांसः |
| **त्वयाऽऽसनेन** | – | त्वया + आसनेन |
| **वेदोपनिषत्** | – | वेद + उपनिषद् |
| **चैतदुपास्यम्** | – | च + एतत् + उपास्यम् |

## अभ्यासः

1. **एकपदेन उत्तरत–**

   (क) अयं पाठः कस्माद् ग्रन्थात् सङ्कलितः?
   (ख) सत्यात् किं न कर्त्तव्यम्?
   (ग) आचार्यः कम् अनुशास्ति?
   (घ) स्वाध्याय-प्रवचनाभ्यां किं न कर्त्तव्यम्?
   (ङ) अस्माकं कानि उपास्यानि?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत–**

   (क) आचार्यस्य कीदृशानि कर्माणि सेवितव्यानि?
   (ख) शिष्यः किं कृत्वा प्रजातन्तुं न व्यवच्छिन्द्यात्?
   (ग) शिष्याः कर्मविचिकित्सा विषये कथं वर्तेरन्?
   (घ) काभ्यां न प्रमदितव्यम्?
   (ङ) ब्राह्मणाः कीदृशाः स्युः?

© NCERT not to be republished

**3. रिक्तस्थानपूर्तिं कुरुत-**

(क) वेदमनूच्याचार्यो ...................... अनुशास्ति।

(ख) सत्यं ...................... धर्मं ......................।

(ग) यान्यनवद्यानि ...................... तानि सेवितव्यानि।

(घ) यथा ते तत्र वर्तेरन् ......................।

(ङ) एषा ......................।

**4. मातृभाषया व्याख्यायेताम्-**

(क) देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम्।

(ख) यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि।

**5. अधोनिर्दिष्टपदानां समानार्थकपदानि कोष्ठकात् चित्वा लिखत-**

(क) अनूच्य ......................

(ख) संविदा ......................

(ग) ह्रिया ......................

(घ) अलूक्षा ......................

(ङ) उपास्यम् ......................

(सद्भावनया, सम्बोध्य, लज्जया, अनुपालनीयम्, अरूक्षा)

**6. विपरीतार्थकपदैः योजयत-**

| | |
|---|---|
| (क) सत्यम् | अलूक्षा |
| (ख) धर्मम् | अश्रद्धया |
| (ग) श्रद्धया | अनवद्यानि |
| (घ) अवद्यानि | अधर्मम् |
| (ङ) लूक्षा | असत्यम् |

**7. अधोनिर्दिष्टेषु पदेषु प्रकृति-प्रत्यय-विभागं कुरुत-**

प्रमदितव्यम्, अनवद्यम्, उपास्यम्, अनुशासनम्



© NCERT not to be republished

# योग्यताविस्तार:

**उपनिषद्** – मानवचिन्तनस्य परमोपलब्धिस्वरूपा: उपनिषद: निश्चितरूपेण भारतीयसंस्कृते: अद्वितीया निधय: सन्ति। उपनिषत्सु संवादमाध्यमेन जीवजगद्ब्रह्मविषयकतत्त्वानां निरूपणमस्ति। एतासाम् उपनिषदां प्रादुर्भाव: वैदिकज्ञानस्य विकासपरम्परायां जात:। अस्मात् कारणात् विविधवैदिकशाखानां दार्शनिकचिन्तनविकासक्रमे उपनिषदां विशिष्टं स्थानम् अस्ति।

चतुर्णां वेदानां पृथक् पृथक् उपनिषद: सन्ति। प्रमुखोपनिषदां परिगणनमित्थं कृतम्। ईश–केन–कठ–प्रश्न–मुण्डक माण्डूक्य तित्तिरि: बृहदारण्यकछान्दोग्यं च। ईशावास्योपनिषद्, केनोपनिषद्, कठोपनिषद्, प्रश्नोपनिषद्, मुण्डकोपनिषद्, माण्डूक्योपनिषद्, तैत्तिरीयोपनिषद्, बृहदारण्यकोपनिषद्, छान्दोग्योपनिषद्, ऐतरेयोपनिषद्, श्वेताश्वतरोपनिषद् इति।

**तैत्तिरीयोपनिषद्** – उपनिषदियं कृष्णयजुर्वेदस्य तैत्तिरीयसंहिताया: ब्राह्मणग्रन्थस्य अन्तिमो भाग: तैत्तिरीयारण्यकमिति कथ्यते। अस्मिन् आरण्यके दशप्रपाठका: सन्ति। एतेषु प्रपाठकेषु सप्तमत: नवमप्रपाठकपर्यन्तं यो भाग: स एव तैत्तिरीयोपनिषद् इति कथ्यते। शिक्षावल्ली ब्रह्मानन्दवल्ली भृगुवल्ली च तेषां क्रमश: नामानि।

**शिक्षावल्ली** – अयं पाठ: शिक्षावल्लीत: सङ्कलितोऽस्ति। शिक्षावल्लीप्रपाठके ओङ्कारस्य महत्त्व–वर्णनं धर्माचरणसम्बन्धिविचारश्च विशदरूपेण प्रस्तुतम्।

**ब्राह्मण:** – ब्रह्मशब्दात् निष्पन्न:। ब्रह्मशब्दो ज्ञानवाचक:। अत: ब्राह्मण: = ज्ञानी।

© NCERT not to be republished